Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
UGC App. No. 64785 | Impact Factor (IIJIF): 4.213 | Vol. 6, Issue 1 | May 2018 - Oct. 2018 | pp. 94-97

सामाजिक मीडिया : नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन

जय प्रकाश सिंह

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

डॉ. विष्णु कुमार

शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

शोध सारांश

पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान के विकास से सूचना प्रसारण के क्षेत्र में जो क्रांति आयी है उससे भारतीय परिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्रों में सोशल मीड़िया ने काफी दुष्प्रभावित किया है। समाज के सभी वर्ग (अभिभावक वर्ग, शिक्षक वर्ग, नेता वर्ग, अधिकारी वर्ग) चिन्तित हैं कि भारत में सोशल मीड़िया के क्षेत्र में फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, यू-ट्यूब एवं गूगल प्रमुख रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इसके माध्यम से रहन-सहन, भाषा, विचार, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। आज किशोरावस्था एवं युवावर्ग के लोग इस तरह आदी हो गये हैं कि इसके बिना एक दिन नहीं रह सकते। या यूं कहूं तो इसके बिना शायद जीवन की कल्पना करना नहीं चाहते, अत: ''अति सर्वत्र वर्जयते'' कहावत ठीक ही बैठती है। आज इसी विषय पर मेरी कोशिश रहेगी कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग, शिक्षा वर्ग एवं अभिभावक वर्ग को इस ज्वलन्त समस्या सामाजिक मीडिया द्वारा प्रभावित होने वाले क्षेत्र, सामाजिक मीडिया द्वारा नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के उपाय पर प्रकाश डाल सकूं ताकि आगे इस पर शोध एवं सम्वर्धन कर उज्वल भविष्य की ओर ले जाया जा सके।

संकेताक्षर : *सोशल मीडिया, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य, अवमूल्यन, भूमिका*

आज किशोरों एवं युवाओं में सोशल मीडिया के आकर्षण, चकाचौंध के कारण समाज का प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित हुआ है। कहते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं- अच्छा और बुरा। इसका प्रभाव भी सामने आया है। एक तरफ अच्छाई के रूप में देखें तो कम समय में अधिक लोगों से सम्पर्क, पूरी दुनिया एक समाज का हो जाना, अभिव्यक्ति की आजादी, कम खर्च में प्रचार-प्रसार, प्रियजनों से सीधा सम्पर्क, मनोरंजन, ज्ञान का नया भण्डार, पैसे कमाने का जरिया आदि-आदि के रूप में। वहीं इसके अनेक दोष भी सामने दिख रहे हैं। आज इसी विषय पर मेरी कोशिश रहेगी कि समाज के बुद्धिजीवी वर्ग, शिक्षा वर्ग एवं अभिभावक वर्ग को इस ज्वलन्त समस्या पर प्रकाश डाल सकूं ताकि आगे इस पर शोध एवं सम्वर्धन कर उज्वल भविष्य की ओर ले जाया जा सके। पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान के विकास से सूचना प्रसारण के क्षेत्र में जो क्रांति आयी है उससे भारतीय परिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, शैक्षिक क्षेत्रों में सोशल मीडिया ने काफी दुष्प्रभावित किया है। समाज के सभी वर्ग (अभिभावक वर्ग, शिक्षक वर्ग, नेता वर्ग, अधिकारी वर्ग) चिन्तित हैं कि भारत में सोशल मीडिया के क्षेत्र में फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्विटर, यू-ट्यूब एवं गूगल प्रमुख रूप से प्रभावित कर रहे हैं। इसके माध्यम से रहन-सहन, भाषा, विचार, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। आज किशोरावस्था एवं युवावर्ग के लोग इस तरह आदी हो गये हैं कि इसके बिना एक दिन नहीं रह सकते। या यूं कहूं तो इसके बिना शायद जीवन की कल्पना करना नहीं चाहते, किन्तु ''अति सर्वत्र वर्जयते'' कहावत ठीक ही बैठती है। उदाहरण स्वरूप चाय में अधिक मीठा डालने से चाय का स्वाद, चाय कम शरबत हो जाता है। ठीक उसी प्रकार संचार व्यवस्था के विकास से इन सोशल मीडिया के अत्यधिक तेजी एवं अंधाधुंध उपयोग से बुरा प्रभाव पड़ा है।

सामाजिक मीडिया द्वारा प्रभावित होने वाले क्षेत्र

परिवारिक क्षेत्र

आज परिवार के सभी सदस्य इस तकनीकी युग में काफी व्यस्त रहते हैं। जिससे अब वे पारिवारिक सदस्यों के बीच जो भावात्मक एवं संवेगात्मक रूप से जुड़ने का समय नहीं मिलता है। अब तो

Scanned by CamScanner